International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Jan-Feb- 2019, Volume-6, Issue-1
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

भारत की युवा शक्ति : चुनौतियाँ व संभावनाएं

डॉ हंसा शर्मा

सहायक आचार्यए राजकीय कला महाविद्यालय

चिमनपुराए जयपुरए राजस्थान

सार

किसी देश की मौलिक प्रगति का निर्धारण उसका शिक्षित युवा वर्ग ही करता है। आज देश की सीमाएँ विदेशी षड्यंत्रों और आतंकवाद से त्रस्त हैं। देश की अखंडता को चुनौतियां मिल रही हैं। ऐसे समय में युवा वर्ग का दायित्व बहुत बढ़ गया है। भारत को खाद्य उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाने (हरित क्रांति) से लेकर परमाणु शक्ति संपन्न बनाने तक का जिम्मा युवा कंधों ने उठाया। कंप्यूटर क्रांति व नई आर्थिक नीति भी युवा मस्तिष्क की ही उपज थी। युवा देश के राजनीतिक और सामाजिक मुद्दों पर टिप्पणियां कर रहे हैं और पिछड़ी सोच रखने वाले बड़बोले राजनेताओं को सोच समझकर बोलने पर भी मजबूर कर रहे हैं। चरित्रवान, निर्भीक और जागरूक युवा संगठित रूप से आगे आकर आज समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, शोषण तथा अन्य कई सामाजिक विकृतियों से देशवासियों की रक्षा कर सकते हैं।राजनीति में युवा वर्ग की विशेष उपादेयता है। युवा उत्साह और ऊर्जा से परिपूर्ण होता है और अपने इन्हीं गुणों से वह राजनीति में भी गति और गरिमा लाता है। राजनीति की गतिशीलता के लिए यह जरूरी है कि इसमें युवा वर्ग की भागीदारी बढ़े। राजनीति में युवा वर्ग की सक्रियता गुणात्मक बदलाव लाती है। आशा और स्फूर्ति का संचार करती है। युवा सोशल मीडिया के जरिए देश की राजनीति के प्रति अपनी राय जाहिर कर रहे हैं।

मुख्य शब्दः देश, युवा, प्रगति, विकास, सामाजिक।

प्रस्तावना

“जिनकी ऊर्जा अक्षुण्ण, जिनका यश अक्षय, जिनका जीवन अंतहीन, जिनका पराक्रम अपराजेय, जिनकी आस्था अडिग और संकल्प अटल होता है, वह युवा है और इनकी शक्ति युवा शक्ति है।”

उक्त सूत्र वाक्य से हम युवा वर्ग की महत्ता को समझ सकते हैं। आंखों में उम्मीद के सपने, नई उड़ान भरता हुआ मन, कुछ कर दिखाने का दमखम और दुनिया को अपनी मुट्ठी में करने का साहस रखने वाला युवा कहा जाता है। युवा होने का अर्थ है विशाल क्षमता, जिज्ञासा, अनंत संभावनाएं, ऊर्जा, रचनात्मकता, हिम्मत और धैर्य आदि। हमारे देश की एक मजबूत नींव रखने के लिए उनके पास अपेक्षित कौशल रवैया व्यवहार, क्षमता और ज्ञान है।

आचार्य कौटिल्य ने मगध की जनता को नंद वंश के शासन से मुक्ति दिलाने के लिए एक युवा चंद्रगुप्त मौर्य को अपना प्रमुख साधन बनाया था। पुनर्जागरण काल में राजा राममोहन राय, स्वामी दयानंद सरस्वती के साथ विवेकानंद जैसे युवा विचारक ने धर्म एवं समाज सुधार आंदोलन का नेतृत्व किया। स्वामी विवेकानंद ने तो शिकागो धर्म सम्मलेन (1893) में अपनी ओजस्वी भाषण शैली एवं विद्वता के बलबूते भारतीय धर्म दर्शन की विजय पताका फहरा दी थी। उनके ओजस्वी भाषण के बाद पश्चिमी साम्राज्यवादी देशों के लोग भी भारतीय ज्ञान परंपरा से अचंभित हो गए थे। टीपू सुल्तान, रानी लक्ष्मीबाई, भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद और नेताजी सुभाषचंद्र बोस जैसे युवा क्रांतिकारियों ने अंग्रेजों के दांत खट्टे कर दिए थे। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के आंदोलनों को सफल बनाने एवं उनके नेतृत्व में भारत को आजादी दिलाने में कई युवा नेताओं का भी योगदान रहा है। यदि आजादी से लेकर अब तक के सात दशकीय समकालीन भारत के इतिहास की बात की जाए तो इस काल में भी हुए कई आंदोलनों और परिवर्तनों का नेतृत्व युवाओं ने ही किया है। भारत को खाद्य उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाने (हरित क्रांति) से लेकर परमाणु शक्ति संपन्न बनाने तक का जिम्मा युवा कंधों ने उठाया। कंप्यूटर क्रांति व नई आर्थिक नीति भी युवा मस्तिष्क की ही उपज थी। युवा देश के राजनीतिक और सामाजिक मुद्दों पर टिप्पणियां कर रहे हैं और पिछड़ी सोच रखने वाले बड़बोले राजनेताओं को सोच समझकर बोलने पर भी मजबूर कर रहे हैं। युवा जिस भी दल की ओर अपना रूझान प्रदर्शित करेंगे, निश्चित ही उस दल को फायदा पहुंचेगा ।युवा किसी भी देश और समाज में बदलाव के मुख्य वाहक होते हैं। इतिहास गवाह है कि आज तक दुनिया में जितने भी क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं, चाहे वे सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक रहे हों, उनके मुख्य आधार युवा ही रहे हैं। भारत में भी युवाओं का एक समृद्धिशाली इतिहास है। प्राचीनकाल में आदिगुरु शंकराचार्य से लेकर गौतम बुद्ध और महावीर स्वामी ने अपनी युवावस्था में ही धर्म एवं समाज सुधार का बीड़ा उठाया था।

यदि वर्तमान भारत की बात की जाए तो यह दुनिया का सबसे युवा देश है। जनसंख्या के आंकड़ों के मुताबिक भारत में पच्चीस वर्ष तक की आयु वाले लोग कुल जनसंख्या का पचास फीसद हैं, वहीं पैंतीस वर्ष तक वाले कुल जनसंख्या का पैंसठ फीसद हैं। यही कारण है कि इसे दुनिया भर में उम्मीद की नजरों से देखा जा रहा है और इक्कीसवीं सदी की महाशक्ति होने की भविष्यवाणी की जा रही है। युवा आबादी ही देश की तरक्की को रफ्तार प्रदान कर सकती है। जैसा कि भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने कहा था कि हमारे पास युवा संसाधन के रूप में अपार संपदा है और यदि समाज के इस वर्ग को सशक्त बनाए जाए तो हम बहुत जल्द ही महाशक्ति बनने के लक्ष्य को हासिल कर सकते हैं।

यह बात शत–प्रतिशत सत्य है कि बिना खनिज संसाधन के भी किसी देश का विकास हो सकता है, लेकिन बिना मानव संसाधन के देश के विकास के बारे में सोचा भी नहीं जा सकता। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हम जापान का ले सकते हैं, जिसने खनिज संसाधनों के अभाव के बावजूद अपने मानव संसाधन के दम पर विकास की इबारत लिखी और आज दुनिया की तीन बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। यदि भारत के राज्यों की बात की जाए तो बिहार, छत्तीसगढ़ और ओड़िशा जैसे राज्य संसाधनों के बावजूद पिछड़े हुए हैं, जबकि केरल, कर्नाटक जैसे राज्य विकास के मामले में आगे हैं।

यदि शिक्षा, स्वास्थ्य एवं कौशल विकास में निवेश करके मानव संसाधन को मानव पूंजी में तब्दील कर दिया जाए तो निश्चय ही भविष्य में इसका बेहतर प्रतिफल मिलेगा। यदि मानव संसाधन का उचित दोहन और प्रबंधन नहीं किया जाता तो यही विकास में सबसे बड़ी बाधा भी उत्पन्न करता है। उदाहरण के रूप में हम आतंकवाद, नक्सलवाद और उग्रवाद में संलिप्त युवाओं को ले सकते हैं। आतंकवाद, नक्सलवाद और उग्रवाद जैसे नकारात्मक तत्व भी अपने मंसूबों को अंजाम देने के लिए युवाओं को ही अपना माध्यम बनाते हैं।

आतंकवाद के लिए जम्मू–कश्मीर का उदहारण ले सकते हैं जहां के युवाओं को बरगला कर आतंकवादी अपने नापाक मंसूबों को अंजाम देते रहे हैं। अस्सी के दशक में पंजाब भी ऐसे ही संकट से जूझ रहा था। पश्चिम बंगाल, छतीसगढ़ और झारखंड जैसे राज्यों में फैला नक्सलवाद भी युवाओं के कंधों पर ही बंदूक रख कर अपना निशाना साध रहा है।

पूर्वोत्तर में यही हाल है। देश में तेजी से फैलता नशाखोरी का जाल भी युवाओं को अपने चपेट में ले रहा है जिसमें पंजाब का उदाहरण प्रमुख है। ऐसी मुश्किल स्थिति में युवाओं को उपयुक्त मार्गदर्शन की अति आवश्यकता है। भारत की युवाशक्ति को सकारात्मक कार्यों में प्रयुक्त करने की जरूरत है। आवश्यकता है ऐसे प्रेरणा स्रोतों एवं पथ–प्रदर्शकों की, जो युवा पीढी को सकारात्मक और बेहतर रास्ता दिखा सकें।

युवाओं के दिग्भ्रमित होने और गलत रास्ते पर जाने का एक कारण लोग बेरोजगारी को मानते हैं। लेकिन युवाओं को अपनी ये मानसिकता बदलनी होगी कि सरकारी नौकरी ही रोजगार का एकमात्र जरिया है। भारतीय समाज में यह आम धारणा है कि सरकारी नौकरी ही जीवन की सफलता का पैमाना है। समाज के लोगों को इस धारणा को बदलना होगा।

उदारीकरण एवं सूचना क्रांति के आधुनिक युग में रोजगार एवं स्वरोजगार की संभावनाओं की कमी नहीं है। इसका उदाहरण अमेरिका और यूरोपीय देशों से ले सकते हैं जहां युवा इन संभावनाओं का भरपूर लाभ ले रहे हैं। भारत में भी उदाहरण ले सकते हैं जहां लोगों ने उद्यमशीलता के बूते स्वयं को और देश के अन्य लोगों को भी रोजगार प्रदान कर सक्षम बनाया है।

भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। इसके बावजूद यहां राजनीति में युवाओं की भागीदारी बेहद कम है। अक्सर देखा गया है कि राजनीति को लेकर युवाओं में नकारात्मकता का भाव होता है, इसलिए वे राजनीति में नहीं आना चाहते। लेकिन उन्हें यह समझना चाहिए कि जब तक वे राजनीति में भागीदारी नहीं करेंगे, तब तक राजनीति से नकारात्मकता दूर नहीं होगी। भारतीय संविधान ने अठारह साल से अधिक उम्र के युवाओं को मतदान का अधिकार दिया हुआ है। ऐसे में युवाओं की भूमिका काफी अहम हो जाती है।

इसके अलावा युवाओं को बेहतर मानव संसाधन में बदलने के लिए शिक्षा व्यवस्था में भी सुधार की जरूरत है। देश के विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में अभी भी परंपरागत तरीके से ही पढ़ाई हो रही है। इस कारण हमारे विश्वविद्यालय वैश्विक प्रतिस्पर्धा में पिछड़े हुए हैं। शिक्षा व्यवस्था का सबसे बड़ा दोष अभी भी यह है कि प्राप्तांकों को बहुत महत्त्व दिया जाता है जिसकी वजह से बच्चों में रटने की प्रवृत्ति हो जाती है और उनमें मौलिकता एवं रचनात्मकता का विकास नहीं हो पाता है। यही कारण है कि हम नवाचार एवं नवोन्मेष में पिछड़े हुए हैं। इसके लिए हमें शिक्षा के प्राथमिक एवं उच्च दोनों ही स्तर पर सुधार के प्रयास करने होंगे।

जहां तक बात है शोध और अनुसंधान के क्षेत्र की, तो इसकी स्थिति भी अच्छी नहीं है। ऐसा नहीं है कि देश में प्रतिभाओं की कमी है। देश के ही युवा जब अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस जैसे देशों में जाते हैं तो वहां अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाते हैं और नोबेल जैसे प्रतिष्ठित पुरस्कार भी पाते हैं।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में तो भारत के युवाओं का डंका पूरी दुनिया में बज रहा है, लेकिन प्रतिभा–पलायन की वजह से हम उनका लाभ नहीं ले पा रहे हैं। हमें यह समझना होगा कि युवाओं की तरक्की से ही देश की तरक्की होगी। जिस दिन राजनीति से लेकर प्रशासन तक, समाज से लेकर विज्ञान तक, खेल से लेकर कारोबार तक युवाओं की भागीदारी बढ़ेगी, उस दिन देश का भविष्य उतना ही उज्ज्वल होगा।

भारत जैसे विकासशील राष्ट्र विवेकसम्मत आयोजन के साथ अपने उत्साही युवाओं और उनके कल्याण को प्रोत्साहित करते हैं। 2020 तक भारत की 65 प्रतिशत आबादी 35 साल से कम की होगी और हम दुनिया के सबसे युवा राष्ट्र बन जाएंगे। इसी कारण आज के भारत को युवा भारत कहा जाता है क्योंकि हमारे देश में असम्भव को संभव में बदलने वाले युवाओं की संख्या सर्वाधिक है। भारत जैसे विकासशील राष्ट्र के लिए युवा एक खजाना है जो अनमोल है।

युवा राष्ट्रीय विघटन, अस्थिरता, राष्ट्रीय व सामाजिक विसंगतियों तथा अलगाववाद आदि के खिलाफ मुखर होकर जहां एक सकारात्मक व सृजनात्मक सोच को विस्तार देते हैं, वहीं राज्य के लोककल्याणकारी स्वरूप एवं जनहितकारी व्यवस्था प्रदान करने में भी सराहनीय भूमिका निभाते हैं। ऐसा करते हुए वे राष्ट्र निर्माण की बाधाओं को दूर करते हैं।

सबसे अच्छी बात है कि भारतीय राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाने वाले युवाओं की संख्या का विस्तार तेजी से हो रहा है। आईआईटी, आईआईएम और देश के विभिन्न हिस्सों में अच्छे संस्थान से शिक्षा पा रहे ऐसे कई युवा हैं जो राजनीति में प्रवेश के लिए इच्छुक दिखाई दे रहे हैं। युवाओं की राजनीति में बढ़ती दिलचस्पी पिछले तीन–चार वर्षों में सभी चुनाव विश्लेषकों और राजनीति पर बारीक नजर रखने वालों के लिए आकर्षण का विषय रही है। वर्ष 2013 में सेंटर फोर द स्टडी ऑफ डेवलपिंग सोसायटीज (सीएसडीएस) ने एक सर्वे में भी इस तरफ इशारा किया था कि अब राजनीति के प्रति युवाओं का रूझान स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है।

इतिहास साक्षी है कि संसार के पटल पर जितने भी विद्रोह आन्दोलन हुए हैं चाहे वह सत्ता परिवर्तन के लिए हो, आजादी के लिए अथवा व्यवस्था परिवर्तन के लिए हो, युवा वर्ग की महत्त्वपूर्ण भूमिका को झुठलाया नहीं जा सकता है। कलिंग युद्ध के समय वहां के न केवल युवा और युवतियों ने विशाल सेना का सामना किया, बल्कि वहां के छोटे–छोटे निःसहाय बच्चों ने भी साहसपूर्वक मातृभूमि की बलि वेदी पर अपने प्राण न्यौछावर कर दिए थे। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान इंग्लैंड के किशोरों ने अनेक महत्त्वपूर्ण कार्यों द्वारा अपने देश की सेवा की थी। इस प्रकार हम आंदोलनों की सफलता के एक महत्त्वपूर्ण कारक के रूप में युवा वर्ग की महत्ता को अवश्य स्वीकार कर सकते हैं। बहुत से विचारकों ने युवा शक्ति को राष्ट्र शक्ति के रूप में स्वीकार किया है।

अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में देखें तो हम पाते हैं कि एशिया, अफ्रीका व लैटिन अमेरिका के अनेक राष्ट्रों में लोकतंत्र की मांग के समर्थन में उठाई गई आवाजों के निर्माण की पृष्ठभूमि तैयार करने, जन–जन राजनीतिक चेतना जगाने, राष्ट्रवाद की भावना विकसित करने एवं लोकतांत्रिक सरकारों की स्थापना करने में युवाओं की भूमिका निर्णायक रही। इसके बाद देशों के राजनीतिक आधुनिकीकरण एवं विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देने के प्रसंग में युवाओं की सार्थक व निर्णायक भूमिका रही । विकासशील राष्ट्रों को प्रगति के पथ पर ले जाने में तो युवाओं का विशेष योगदान रहा। युवाओं ने विकास और राजनीतिक आधुनिकीकरण को उत्कर्ष प्रदान किया ।

राजनीति में युवा भागीदारी बढ़ाने हेतु शासन एवं सरकार के प्रयास भी जारी है। राष्ट्रीय युवा नीति (2014) का उद्देश्य देश के युवाओं का सशक्तिकरण करना, ताकि वे अपनी पूरी क्षमता हासिल कर सकें और उनके माध्यम से भारत, राष्ट्रों के समुदाय में उचित स्थान हासिल करने में सक्षम हो सके। इसे हासिल करने के लिए 5 महत्वपूर्ण लक्ष्यों, 11 प्राथमिकता क्षेत्रों और तदनुरूप भावी अनिवार्यताओं की पहचान की गई है, जिन्हें युवाओं के विकास के लिए आवश्यक समझा गया है। जिनका प्रमुख लक्ष्य एक सुदृढ़ और स्वस्थ पीढ़ी का विकास करना, जो भावी चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार हो एवं राजनीति और शासन में भागीदारी तथा राजनीतिक प्रणाली से बाहर रहने वाले युवाओं को उसमें शामिल करना सम्मिलित है। देश की व्यापक विविधता और क्षेत्र – विषयक जरूरतों और युवाओं के सरोकारों का समाधान करने की जरूरत को देखते हुए राज्य सरकारें भी अब स्वयं की राज्य युवा नीति बनाने लगी हैं। लोकतंत्र, भारतीय राजनीति, मतदान व्यवहार, दबाव व हित समूह राज्यों की राजनीति और राजनीतिक दल जैसे विषयों पर कई अध्ययन किये जा चुके हैं लेकिन युवा राजनीति पर बहुत कम अध्ययन किया गया है, या कह सकते है कि युवा समुदाय जो कि जनता की युवा चेतना का प्रतिनिधि होता है, उनमें आत्म बलिदान और नवीन सृजन की भी शक्ति होती है इन पर अध्ययनों का नितान्त अभाव है। इस कारण प्रस्तुत अध्ययन को युवाओं पर केन्द्रित किया गया है।

भारत में प्रजातंत्र शब्द का मतलब विरोधाभासी होता जा रहा है। चुनाव और पद मिलने के बाद जिम्मेदार आगे बढ़ रहे हैं और जनता पीछे छूट रही है। ऐसा सालों से चल रहा है। सत्ता हासिल करने के बाद जनता की भावनाएं नेताओं के लिए कोई महत्व नहीं रखती है। इसके कारण समाज भी पिछड़ता जा रहा है। पहले के नेता समाज में मूल्यों के लिए जीते थे और अब इसके मायने बदल रहे हैं। इसके कारण युवाओं को इसके प्रति ध्यान देना बेहद जरूरी हो गया है। हर छोटी और

बड़ी घटनाओं पर मंथन करें तो सामने आता है कि ऐसा जिम्मेदार वर्ग के समाज से कट जाने के कारण होता है। लोगों में ज्ञान का अभाव भी समाज को कमजोर बना रहा है। इसके लिए सबसे जरूरी है कि वे युवा जो नई सोच रखते हैं, समाज को आगे लेकर जाने की इच्छाशक्ति रखते हैं उन्हें समाज में बदलाव के लिए आगे आना चाहिए। युवा ही इसकी दिशा बदल सकते हैं। पढ़े लिखे शिक्षित युवा वर्ग को इसके प्रति सोचना होगा। सत्ता का मोह छोड़कर जनता और समाज के हितों के बारे में सोचना होगा। इसके बाद समाज में बदलाव निश्चत होना तय है। कुछ युवाओं का ध्यान अपनी पढ़ाई या प्रतियोगी परीक्षाओं पर रहता है, इसलिए वे राजनीति में नहीं जाना चाहते। कई विसंगतियां जो हमें देश की राजनीति में दिखती हैं तो उन्हें दूर करने के लिए देश के युवाओं को आगे आना होगा।

देश की राजनीति को सुधारने के लिए पढ़े–लिखे युवाओं को राजनीति में आना ही होगा। इससे भारत का भविष्य भी उज्जवल होगा। हालांकि जिन युवा राजनेताओं का ऊपर जिक्र किया गया है, उन्हें राजनीति में बड़ा स्थान या पद परिवारवाद के कारण भी मिला है, लेकिन इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि इन राजनेताओं ने युवा वर्ग को राजनीति में आने के लिए प्रेरित किया है।

देश को सामरिक दृष्टि से सुरक्षित तथा देश के प्रत्येक नागरिक को सुरक्षा प्रदान करने के सन्दर्भ में सैन्य क्षमता एवं पुलिस प्रशासन कि बात आती है तो उसमे तो युवाओं की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका होती है क्योंकि इस क्षेत्र में जितना अधिक युवाओं को प्रतिनिधित्व मिलेगा वह देश उतना ही अधिक सुरक्षित रहेगा । कुछ लोग राष्ट्र निर्माण मात्र और मात्र राजनीतिक प्रतिनिधित्व से जोड़कर देखते हैं, परन्तु राष्ट्र निर्माण मात्र राजनीति से ही नही होता .राष्ट्र निर्माण होता है राष्ट्रवासी से यदि देश में निवास करने वाला प्रत्येक राष्ट्रवासी यह ठान लें कि हमें अन्याय नहीं सहना है अन्याय नहीं करना है तो राष्ट्र निर्माण की वह बुनियाद पड़ेगी कि युगों के बीतने पर भी राष्ट्र की ईमारत मजबूत रहेगी। इसके बाद देश और समाज का हित होना तय हो सकता है।

निष्कर्ष

भारतीय राजनीति में युवा वर्ग का मौजूदा परिदृश्य अत्यंत उत्साहवर्धक है। ऊर्जा से परिपूर्ण अनेक युवा विभिन्न राजनीतिक दलों में अच्छे नेतृत्वकर्ता के रूप में नजर आ रहे हैं। स्फूर्ति एवं नई सोच के साथ ये भारतीय राजनीति में सक्रिय हैं तथा इन्होंने अपने कार्यों से अच्छी छाप छोड़ी है। यह सिलसिला इसी रूप में आगे भी बने रहने की संभावना है। युवा शक्ति ही भारतीय राजनीति में गुणात्मक एवं सकारात्मक बदलाव ला सकती है। यह सुखद है कि मौजूदा दौर में भारत न सिर्फ वैश्विक स्तर पर युवा शक्ति के रूप में उभर रहा है, बल्कि राजनीति में भी भारतीय युवा अच्छा प्रदर्शन कर लोकतंत्र को समृद्ध कर रहे हैं।युवा हाथ न सिर्फ लोकतंत्र का एक साफ–सुथरा चेहरा गढ़ेंगे, बल्कि उसे ताजगी और ऊर्जा भी प्रदान करेंगे, ऐसी उम्मीद की जानी चाहिए। राजनीति में युवा वर्ग का सकारात्मक योगदान देश की कायापलट सकता है अतः युवा वर्ग का राजनीति में होना राष्ट्र निर्माण में बहुमूल्य भूमिका निभा सकता है। इस प्रकार किसी भी देश में राजनीतिक गतिशीलता और पारदर्शिता के लिए राजनीति में युवा वर्ग का होना अत्यंत आवश्यक होता है, क्योंकि यही वह शक्ति है जो गुणात्मक बदलाव लाने में सक्षम होती है

संदर्भ सूची

[1] कुमार, संजय, भारतीय युवा और चुनावी राजनीति सेगे पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली,(2014)

[2] कोठारी, रजनी, कास्ट इन इंडियन पॉलिटिक्स, ओरिएण्ट लॉगमेन, दिल्ली, 1970.

[3] कोठारी, रजनी, पॉलिटिक्स इन इंडिया ओरिएण्ट लॉगमेन, दिल्ली, 1972.

[4] गांगुली, बी. एवं गांगुली, एम., वोटिंग बिहेवियर इन ए चेन्जिंग सोसायटी, स्टर्लिंग पब्लिकेशन्स, नईदिल्ली, 1975.

[5] गुप्ता, बी. दास, स्टूडेन्ट पालिटिक्स इन द वेस्ट फ्रंटियर, कलकत्ता, सितम्बर 14, 1968

[6] गेना, सी.बी., तुलनात्मक राजनीति एवं राजनीतिक संस्थाए, विकास पब्लिशिंग हाउस, नईदिल्ली, 1978.

[7] गोयल, एम.एल., पॉलिटिकल पार्टिसिपेशन इन ए डेवलपिंग नेशन इंडिया एशिया पब्लिशिंग हाउस, बॉम्बे, 1974.

[8] घोष, एस.के., इण्डियन डेमोक्रेसी ड्रिल्ड पॉलिटिक्स एण्ड पॉलिटीशियंस, ए. पी. एच. पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1997

[9] चतुर्वेदी, अरूण, राजनीति के विविध आयाम, प्रिंटवेल पब्लिकेशर्स, 1996.

[10] तिलक, रघुकुल, लोकतन्त्रीय स्वरूप एवं समस्याएँ, हिन्दी ग्रंथ अकादमी, लखनऊ, 1972.

[11] गुप्ता, बी. दास, स्टूडेन्ट पालिटिक्स इन द वेस्ट फ्रंटियर, कलकत्ता, सितम्बर 14, 1968

[12] गेना, सी.बी., तुलनात्मक राजनीति एवं राजनीतिक संस्थाए, विकास पब्लिशिंग हाउस, नईदिल्ली, 1978.